SIMULATIONS
Public Affairs Management Services

D-309, Shivalik Corporate Park, B/h IOC Petrol Pump, Between Shyamal – Shivranjani Cross Rd, On 132 Ft Ring Road, Satellite, Ahmedabad – 380015
Ph : 079- 65214200 Fax : 079-40065014
Email : simulationsindia@gmail.com

Gujarat Vaibhav
Edition: Ahmedabad | **Date:** June 09, 2011 | **Page No:** 12 | **Category:** Sterling Hospital

बहुत जटिल प्रक्रिया है लीवर प्रत्यारोपण की

अहमदाबाद। लगातार 14 घंटे की जहमत के बाद स्टर्लिंग अस्पताल, अहमदाबाद के डॉक्टरों की टीम द्वारा हाल ही में एक जिंदा व्यक्ति के लीवर की सहायता से लीवर सिरोसिस से पीड़ित व्यक्ति में सफल लीवर ट्रांसप्लांट किया गया। आणंद के 52 वर्षीय जनरल प्रैक्टिशनर डॉ. कनुभाई गोहिल एवं उनके संबंधी परमार पर यह ऑपरेशन डॉ. के.एस. सोइन, डॉ. हितेष चावड़ा, डॉ. रवि मोहन्का एवं उनकी टीम द्वारा किया गया। गुड़गांव के मेडिसिटी इंस्टीट्यूट ऑफ लीवर ट्रांसप्लांटेशन एंड रीजनरेटिव मेडिसिन के चीफ ऑफ लीवर ट्रांसप्लांट एंड हिपेटोबिलिअरी सर्जन डॉ. ए.एस. सोइन एवं उनकी टीम को भारत में लीवर ट्रांसप्लांटेशन का सबसे अधिक अनुभव है। इस केस की जानकारी देते हुए स्टर्लिंग अस्पताल, अहमदाबाद के कन्सल्टेंट–हिपेटोबिलिअरी सर्जन तथा लीवर ट्रांसप्लांट प्रोग्राम के डिवीजन चीफ डॉ. हितेष चावड़ा ने बताया कि पिछले माह डॉ. कमुभाई ने पेट की तकलीफ, अशक्ति एवं पीलिया की शिकायत पर अस्पताल से सम्पर्क किया था। चिकित्सकीय जांच में पता चला कि उन्हें 20 वर्ष पूर्व किसी सहायता की तरफ से हेपेटाइटिस–सी का संक्रमण लगा था, जिसके कारण उन्हें लीवर सिरोसिस हुआ था। वह टर्मिनल लीवर फेल्योर के अंतिम चरण के शिकार बने थे तथा लीवर ट्रांसप्लांटेशन किए बगैर वह कुछ सप्ताह ही जिंदा रह सकते थे। इसलिए हमने उन्हें मृत व्यक्ति का लीवर ट्रांसप्लांट नहीं करने की सलाह दी थी। क्योंकि ऐसे मामले में मरीज का ब्लड ग्रुप एवं प्रतीक्षा सूची के नम्बर के आधार पर लीवर प्राप्त करने के लिए एक से 12 माह तक इंतजार करना पड़ता। इसलिए हमारे सामने उन पर एलडीएलटी (लिविंग डोनर लीवर ट्रांसप्लांटेशन) करने का एकमात्र विकल्प था। उनके साले पूनम परमार डॉ. गोहिल की मदद से आए। उनका ब्लड ग्रुप मैच हो रहा था। उन्होंने अपने लीवर का एक हिस्सा दान में देने की इच्छा व्यक्त की। बीस मई को स्टर्लिंग अस्पताल में आसपास के ऑपरेशन थिएटर्स में यह ऑपरेशन किया गया। दानदाता एवं मरीज को अस्पताल से क्रमशः 7वें एवं 12वें दिन तंदुरुस्त एवं स्थिर हालत में छुट्टी दे दी गई। डॉ. चावड़ा ने कहा कि एलडीएलटी एक काफी बड़ा ऑपरेशन है। लीवर दाता एवं स्वीकार करने वाले मरीज के लिए कम से कम 30 स्पेशलिस्ट डॉक्टरों की ऑपरेशन के पहले, दौरान एवं बाद में जरूरत पड़ती है। ऑपरेशन के दौरान तीन सर्जन डोनर के एवं तीन सर्जन लीवर स्वीकार करने वाले मरीज के लिए होते हैं। रिलीफ सर्जन को भी उपस्थित रखा जाता है। डॉ. गोहिल का ऑपरेशन करने वाली टीम में डॉ. एस. पटवारी, डॉ. नीलय मेहता (हिपेटोलॉजिस्ट), डॉ. विस्मित जोशीपुरा, डॉ. अमित शाह, डॉ. आशीष परीख एवं डॉ. सुमाना (सर्जन्स) की स्थानीय टीम शामिल थी।